“´Öत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों मे व्यŒत सामाजिक चेतना”

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड
के मानव्य विद्‌या संकाय अन्तर्गत हिंदी विषय में
×¾Ö ªÖ ¾ÖÖ“ÖÃ¯Ö×ŸÖ… ¯Ößß<“Ö.>ß (ØÆ¤ß) ^¯ÖÖ×¬Ö ÆêŸÖ
¯ÖÃŸÖãŸÖ ¿ÖÖ¬Ö ¯Ö²Ö¬Ö

शोधप्रबंध का संक्षेपण

-: ¿ÖÖ¬Ö ”ÖÖ¡Ö :-
प्रा. विलास तुकाराम राठोड (एम.ए.एम.×±ú×ल, नेट)
हिंदी विभागाध्यक्ष
श्री. रेणुकादेवी क×»ÖÖ, वाणिज्य <¾Ö ×¾Ö–ाान महाविद्यालय, श्रीक्षेत्र माहुर.

-: शोध निर्दे¿Ö×क :-
›Ö. ¸Ö¾ÖÃÖÖÆê²Ö •ÖÖ¬Ö¾Ö
प्रपाठक,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं संशोधन केंद्र,
पीपल्स कॉलेज, नांदेड.

सन - ×¤ÃÖ²Ö¸ - 2014

“मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों म व्यक्त सामाजिक चेतना ”

निम्नलिखीत अनुक्रमानुसार भिन्न - भिन्न अध्यायों
मे यह शोध प्रबंध पुर्ण किया जायेगा ।

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	अध्याय	अध्यायों के नाम
01.	प्रथम अध्याय :	सामाजिक चेतना: अर्थ, स्वरुप और परिभाषा ।
02.	व्दित्तीय अध्याय :	प्रमुख महिला उपन्यासकारों मे व्यक्त सामाजिक चेतना ।
03.	तृत्तीय अध्याय :	सामाजिक चेतना और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास ।
04.	चतुर्थ अध्याय :	राजनीतिक चेतना और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास ।
05.	पंचम अध्याय :	आर्थिक चेतना और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास ।
06.	षष्टम् अध्याय :	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास : भाषा - Û¿Ö»¯Ö …
07.	सप्तम् अध्याय :	^¯ÖÃÖÆüÖ¸ü
08.	†ÛÖ ´Ö ¯Öx¸üx¿ÖÂ™ü :	¯Öx¸üx¿ÖÂ™ü I ´Ö»Ö ¾ÖÖ£Ö ÃÖ“Öß … परिशिष्ट I I संदर्भ ग्रंथ सुची । परिशिष्ट I I I पत्र पत्रिकाएँ।

“मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों मे व्यक्त सामाजिक चेतना ।”

विषय प्रवेश :-

बीसवी शती के अंतिम दशक में हिंदी उपन्यास साहित्य ´Ö अनेक ´ÖxÆ»Ö उपन्यासकारा का प्रादुर्भाव Æ†Ö… इन में से अधिकतर महिला अपन्यासकारों ने भारतीय समाज के विविध रुपों और आयामों का मार्मिक निरुपण अपनी रचनाओं में किया है। खास बात यह है इन महिला लेखिकाओं का उपन्यास स़Öहित्य विषय ¾Öविध्य की दृष्टि से उल्लेखनीय और महत्वपुर्ण है । विषय वैविध्य के साथ साथ इनके उपन्यासों में सामाजिक दायित्व की भावना भी देखने को मिलती है । वर्तमान महिला उपन्यासकारों, सामाजिक चेतना की दृष्टि से सबसे अधिक उल्लेखनीय लेखिका है मैत्रेयी ¯ÖÂ¯Ö … उन्होंने बदलते सामाजिक संद³Ö को आधुनिक दृष्टि से देखा और परखा है। वर्तयुग की नारी की पीडा, यातना और तनाव को उन्होने बखुबी ÃÖ´Ö–Ö Æ इसलिए उनके नारी ¯Ö¡Ö, नारी के अस्तित्व और अस्मिता के लिए कडे से कडा संघर्ष करने के लिए तैयार रहते है। सामाजिक जीवन की चेतना अत्यंत मार्मिक चि¡Ö ण उनके उपन्यासो में हुआ है। चिरबंदिनी नारी को मुक्त करने के लिए उन्होंने हर स्तर पर प्रयास किया है। उन्होंने रेखांकित किया है कि समाज में जितना †न्याय, अत्याचार और शोषण है उन सबकी उपभोक्ता अधिकतर नारी ही है। इनसे मुक्ती दिलाने का प्रयास मैत्रेयीजी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से किया है। इतना ही नहीं अपितु जहाँ अन्य महिला क£Öकारों का लेखन मात्र ड्रÖइंग रुमों तक xÃÖ´ÖßÖ ¸ÆÖ Æ… ¾ÖÆÖ ´Ö¡Öेयीजी ने ÃÖßमित स्त्री लेखन से हटकर ग्रामीण जिवन से जुडे उपन्यास और अनोखेपन का परिचय दिया है। उन्होंने अपने जिए परिवेश को जिस ढंग से प्रस्तुत किया है। उससे उनके उपन्यास मात्र उपन्यास न रहकर अपने समय के दस्तावेज बन गए है। मान¾Öय जीवन के यथार्थ की बडी मार्मिक और सुदंर अभिव्यक्ति उनके उपन्यासों में हुई है।

वर्तमान मानवीय जीवन के खंडीत मुल्यों, ™™ती हुई और भटकती मानवता का प्रभावपुर्ण चि¡Öण उनके उपन्यासों में हुआ है। मैत्रेयी पुष्पा के लेखन कि विशेषŸÖ यह है कि उन्होंने मात्र स्त्री को विषय बनाकर नही, अपितु नारीतर विषयों को लेकर भी उपन्यास लिखे है। यह सच है कि उनके उपन्यास बुन्देलखण्› ÃÖ •Ö› Æ< Æ, पर उनमें मात्र बुंदेलखण्ड अँचल के जन - जीवन की गाथा न होकर संपुर्ण भारतीय ग्रामीण किसानों की अंतहीन यातना को ही उकेरता है। बुन्देलखण्ड के पिछडे अँचल मे जीवन गुजारनेवाली पिछडी जाती के कटु जीवन यथार्थ को उनके उपन्यास अधोरेखित करते है। हम कह सकते है की उनके उपन्यासों मे समय के स्तर बडी बुलंदी के साथ मुखरित हु< Æ… मैत्रेयी पुष्पाजी के उपन्यास न केवल मानव हित आकांक्षा से परिपुर्ण है अपितु खरी और कटु जीवन की अनुभुतियों से भी संपन्न है। अपने

उपन्यासों मै लेखिकाने वातानुकुलित कमरों रहीत, आहत अहं की स्त्री कथाएॅ नहीं कही है बल्की देश की अस्सी प्रतिशत जनता का प्रतिनिधित्व करती स्त्रियों की व्यथा कथा कही है।

मैत्रेयीजी के लेखन की यह विशेषता है की वह किसी वाद , वंश या आन्दोलन से •Ö›Ö Æü†Ö नहीं है। उन्होंने केवल नारी जीवन की संवेदनाओं के Ã¾Ö¸ü को मुखरित किया है। वर्तमान आधुनिक सभ्यता के युग में भी पुरुष सत्तात्मक समाज में नारी की Æü सियत सिर्फ दासी या देऱ्ली की Æüß ¸üÆüß Æîü… उसे मानव की हैसियत से मानने के आग्रह में ही स्त्री चेतना अंकुरित हुई है। नारी को जो दासी का जीवन दिया गया Æîü… ˆÃÖÃÖê ´ÖãŒŸÖ दिलाना ही उसे मानव ºþ¯Ö ´Öë प्रतिष्ठित कराने का प्रयास है और नारी चेतना की उत्प्रेरक शक्ति है। यही वजह है की अपने अधिकारों के प्रति आज की नारी सचेत और सजग हुई है। यही सामाजिक चेतना मैत्रेयीजी के उपन्यासों का प्रमुख स्¾Ö¸ü Æîü…

विषय चयन की प्रेरणा :-

उपन्यास संभवतः वर्तमान युग की सबसे अधिक लोक प्रिय विधा है। इसका कारण यह है कि मानव जीवन के सबसे अधिक निकट है और सबसे अधिक जुडी हुई है उपन्यास में ही मानवीय जीवन की विभिन्न छटाएँ और विभिन्न रुप देखेने को मिलते है। मानव चरित्र उपन्यास के केंद्र में है। वास्तव में उपन्यास Æüß सामाजिक चेतना के केंद्र है। मानव जीवन के यथार्थ की अभिव्यक्ति ही उपन्यास साहित्य का लक्ष्य है। उपन्यास के सृजन का उद्देश्य ही मानव जीवन को सुदरता और शक्ति प्रदान करता है। इसी»»Ö‹ ¯ÖÏÖ¸ü³Ö ÃÖê Æüß मेरी रुचि उपन्यासों ´Öë ¸üÆüß Æîü…

वर्तमान युग में अनेक उत्कृष्ट और प्रतिभा संपन्न महिला उपन्यासकारों का आगमन हुआ इन महिला उपन्यासकारों मे मै सबसे अधिक जिससे प्रभावित Æü†Ö ¾ÖÆü Æîü मैत्रेयी पुष्पा। मैत्रेयीजी पर आलेखों को पढकर ही मैने उनके उपन्यासों पर शोध कार्य करने का निछ्यय किया। मैत्रेयीजी के उपन्यासों पर शोध कार्य करने के चयन का एक कारण यह भी है मै खुद ग्रामीण विभाग से ही आया हुँ। मैत्रेयीजी के उपन्यास ' चाक ' †Öî¸ü ' ²ÖëŸÖ¾ÖÖ ²ÖÆüŸÖß ' को पढकर लगा कि इन उपन्यासों के पा¡Ö ŸÖÖê ´Öê¸êü †ÖÃÖ - पास के ही है। और फिर नारी जीवन की जिस यातना और पीडा का चि¡Öण इस लेखिकाने किया है वह सर्वत्र एक सा ही है। ´Öैत्रेयीजी के उपन्यासों मे स्त्री - पुरुष पात्र गरीब मजदुर है। कडी मेहनत और मजदुरी कर वे अपना पेट भरते है। अधिकतर ये मजदुर पिडीत, शोषित और दलित समाज के है। जिनपर युगों से अत्याचार और अन्या्य होता रहा है। इस समा•Öकि यातनाओं और ¯Öß›Öओं कि यथार्थ †भिव्यÛŒŸÖ मैत्रेयीजी के उपन्यासों मे हुएँ है। उन्होने सही ढंग से शोषित समाज यातनाओं को सम—Öê †Öî¸ü उसकी अत्यंत मार्मिक अभिव्यÛŒŸÖ अपने उपन्यासों मे की। विषय चयन की प्रेरणा यही मेरे लिए मुख्य कारण रहे है। इसके अतिरिक्त भी विषय चयन का एक कारण यह भी रहा की सामाजिक

चेतना की दृष्टी से भी मैत्रेयीजी के उपन्यासों का अपना अलग स्थान और ´ÖÆÛ¾Ö Æî... ÃÖ´ÖÖ•Ö ´Ö हो रहे बदलाव का चितण करने वाले उनके उपन्यास स्त्री - विमर्श के साथ - ÃÖÖ£Ö सामाजिक जन जगृती को भी प्रोत्साहित करते है। वैसे भी सामाजिक जागÖती ही सामाजिक चेतना है जो परिर्वतन का संकेत देती है। मैत्रेयी•Öß का समस्त लेखन ही सामाजिक चेतना की प्रभावपुर्ण अभिव्यÖŒÛÖ से परिपुर्ण है। मानवीय जीवन के मुल्यों की पहचान उनकी रचनाओं ´Ö ×¾Ö×¾Ö¬Ö ÃÛÖ¸Ö ¯Ö¸ Æई है साथ ही वर्तमान जीवन की 'Ö™न और विसंग×ÛÖयों की छटपटाहट उनके उपन्यासों में देखने को मिलती है। मध्यवर्गीय संस्कार, जीवन की एक रसता और खोखले पन की लेखिकाने मार्मिक अभिव्यÖŒÛÖ की है। चेहरों पर ओढे गए नकाबों का पर्दापाश कर इस उपन्यासकार ने मुखौटों के वास्तव की पहचान कराई Æ और फिर यह लेखिका यह ³Öß जानती है कि मात्र रचनाओं के लिखने या पढने से ही जिंदगी के दरवाजे नही खुलते इन दरवाजो कÖ खोलने के लिए जिन उपायों की आवश्यकता है उनकÖ लेखिका जानती है। वह उपाय है शोÂÖÛÖÖ और पीडितों का संगठन। यह उपन्यासकार एक ओर ×¾Ödद्रोह और क्रांती का नारा लगाती है तो दुसरी और व्यवस्था के पहरोंदारों के भ्रम जाल की ओर भी संकेत करती है। स्त्री - ×¾Ö´Ö¿Ö •ÖÃÖ विषय की बात करणे वाली यह लेखिका सामाजिक चेतना के विरुध्द कि •ÖÖ ¸Æß ÃÖÖ•Öß¿Ö कÖ ³Öß जातनती है। यÆß वह चेतना है जो इस रचनाकार के समस्त परिवेश को ही व्याप्त कर डालती है। मेरे लिए यही सब विषय चयन की प्रेरणा के कारण रहे है।

अनु संधान का लक्ष्य :-

‡समें संदेह नहीं कि हर कार्य कÖ एक सुनि¿"Öत लक्ष्य ¸ÆÛÖÖ Æß Æ क्युकी बिना लक्ष के कोई कार्य सफलता पुर्वक पुरा नही किया जा सकता हर मनुष्य के लिये लक्ष्य ¯ÖÖ¯ÛÖß महत्वपुर्ण है और लक्ष्य की प्राप्ती तभी संभव है जब मनुष्य लक्ष्य की प्राप्त के लिएँ निरंतर प्रयत्नशील रहता है। यह भी ध्यान में रखना जरुरी है की लक्ष्य की प्राप्ती के लिए प्रगाढ रुची और सच्ची लगन की आवश्यकता होती है। " प्रस्तुत शोध कार्य मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों मे सामाजिक चेतना " को पुर्ण करना ही मेरा लक्ष्य है। यही मेरा -ान य-न है जिसे अध्ययन और अनुशीलन की अंतिम आहुति से पुर्ण करना मेरा लक्ष्य है।

समकालीन उपन्यास साहित्य ´Öत्रेयी पुष्पाजी के उपन्यासों ने सर्वाधिक ध्यान आकर्षित किया है। उनके उपन्यास न केवल मानव हित आंकाक्षा से परिपुर्ण है बल्कि जीवन की खरी और कटु अनुभुतियों से भी परिपुर्ण है। उनकी रचनाएँ मात्रा रचनाएँ न होकर जीवन अनुभवों के दस्तावेज ही है। समकालीन कथा साहित्य में सबसे अधिक रचनात्मक सार्थकता जिन में है, उन में मैंत्रेयी पुष्पा महत्वपुर्ण है। वे वर्तमान उपन्यास साहित्य में एक विशिष्ट लेखिका मानी जाती Æ... क्योकि उनका लेखन एकदम पारदर्शी और बेलाग है। जोखिम उठाने की उनकी प्रवृति उनके

^¯Öन्यासों को और अधिक पठनीय बनाती है। नारी विमर्श और उसÃÖ •Ö›ü तथा अनजुडे प्रश्नÖ - उत्तर तलाशते उनके उपन्यास हिंदी उपन्यास साहित्य में †पना विशिष्ट स्थान रखते है। वर्तमान युग की वे एक ऐसी रचनाकार है जो अपने परिवेश और उसकी सक्रियता से भली भांती परिचिŸÖ है उनका लेखन सीधा सादा और सपाट है। उसमें किसी प्रकार की खोंच या खोट नही है। उनके जैसी साफ बयानी और सहजता समकालीन बहुत कम लेखिकाओं में देखने को मिलेगी। इसी अर्थ मे उनका समस्त लेखन अपना अलग स्थान रखता है। एक उपन्यासकार के रुप में उन्हे जो सफलता मिली है, वह विशेष रुप से प्रसंशनीय है। उनके उपन्यासों में यथास्थान सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक चेतना की सुंदर अभिव्यक्ती हुई है। ध्यान में रखकर इस शोध प्रबंध का शीर्षक " मेंत्रेयी पुष्पाजी के उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक चेतना " रखा गया है। अध्ययन की सुविधा कि दृष्टी से इस शोध प्रबंध को सात भागो में विभाजित किया गया है। यह विभाजन निम्न लिखित है।

प्रथम अध्याय : सामाजिक चेतना का †£Ö, Ã¾ÖºÝ¯Ö †Öî¸ ¯Ö×¸³ÖÖÂÖÖ, Ü**व्दतीय अध्याय :** प्रमुख महिला उपन्यासकारों में व्यक्त सामाजिक चेतना, **तृतीय अध्याय :** सामाजिक चेतना †Öî¸ ´Öत्रेयी पुष्पा के उपन्यास, **चतुर्थ अध्याय :** राजनीतीक चेतना और मैंत्रेयी पुष्पा के उपन्यास, **पंचम अध्याय:** आर्थिक चेतना और मेंत्रेयी पुष्पा की उपन्यास, **षस्टम अध्याय** : मैंत्रेयी पुष्पा के ^पन्याÃÖ : ³ÖÖÂÖÖ - Ü¿Ö»¯Ö, ÃÖ¯ŸÖ´Ö **अध्याय :** ^¯Ö ÃÖÓÆÖ¸ü…

¿ÖÖ¬Ö - प्रबंध के प्रथम अध्याय : " सामाजिक चेतना का अर्थ, स्वरुप और परिभाषा " ´Ö सामाजिक चेतना का विस्तार से अध्यायन करते हुए यह रेखांकित किया जायेगा कि साहित्य ही सामाजिक चेतना की चित्रण का एक ऐसा सार्थक माध्यम है जिससे समाज में साहित्य का स्वरुप स्थिर होता है। और उपन्यास साहित्य तो सबसे अधिक लोकप्रियÖ, ÃÖ¿ÖŒŸÖ †Öî¸ ÃÖ¾Ö सामान्य तक पहुचने का सबल माध्यम है। उपन्यास साहित्य और समाज का अन्योन्याÁÖय सम्बन्ध मानवता के विकास का आधार है। साहित्य के विकास का अध्ययन करने से –ÖÖŸÖ ÆÖŸÖÖ है की उपन्यास के माध्यम से ही सामाजिक चेतना निरंतर प्रवाहित होते रही है। इसी अध्याय में सामाजिक चेतना के अर्थ, Ã¾Öरुप और परिभाषा पर विस्तार में अनु¿Öीलन किया जायगा।

व्दितीय अध्याय: " प्रमुख महिला उपन्यास कारों में व्यक्त सामाजिक चेतना " में हिंदी उपन्यास साहित्य में सामाजिक चेतना का चित्रणजिन महिला उपन्यासकारों में हुआ है उसे युगानुरुप ×¾Ö¿»ÖêÂÖ×ŸÖ किया जायेगा… ³ÖÖ¸üŸÖेंदु युग में उपन्यास ×¾Ö¬ÖÖ की शुरुआत तो हुई किंतु सामाजिक चेतना की दृष्टी ÃÖ इस युग के उपन्यासकार अनभि–ा ही रहे। हाँ इतना आवश्यक हुआ की कुछ उपन्यासकारों ने सामाजिक समस्याओं कीÖ चित्रणअपनी रचनाओं में किया Ü¾¤ü¾ÖेÖदी युग में उपन्यास साहित्य ने कला और उपादान की दृष्टी से अधिक उन्न×¢Ö की पर

सामाजिक चेतना का×Ö ×“Ö¡ÖÞÖ इस युग में भी बहुत संकुचित रुप में दिखाई देता है। हिंदी उपन्यास साहित्य में सामाजिक चेतना का स्पष्ट स्वरुप प्रेमचंद युग में ही दिखाई देता है। यद्यपि व्दिवेदी युग की महिला कथाकारों का योगदान घ्यान आकर्षित करता है पर संख्यात्मक दृष्टी से यह योगदान नगण्य ही था। इसके बाद के युग में अनेक महिला लेखिकाओं का आगमन हुआ जिनकी रचनाओं में सामाजिक चेतनाका चित्रण किया गया है। यदि यह कहा जाय की हिंदी उपन्यासों में सामाजिक चेतना का चित्रण प्रेमचंद के आगमन के कारण ही हुआ है तो अनुचिÖŸÖ नहीं होगा। उनके उपन्यासों में ही सबसे पहले सामाजिक सुधार की बात कही गई है। यही सामाजिक चेतना है। उन्हीं से प्रेरणालेकर हिंदी उपन्यासकारोंने सामाजिक निरुपन अपने उपन्यासों में किया। इसी युग में कुछ महिला उपन्यास कारोका आगमन हुआ जिन्होनें अपने उपन्यासों में सामाजिक प्रश्नों को उठाते हुए सामाजिक चेतना के पक्ष को मुखरित किया। पर प्रेमचंद युग में अनेक महिला कथाकारों का आगमन हुआ जिन्होंने अपने उपन्यासों में ×¾Ö×¾Ö¬Ö विषयों का चितन करते हुएँ सामाजिक चेतना को विकसीत किया महिला कथाकारों में सामाजिक चेतना कें विकास का विस्तार में अध्यायन इस अध्याय में किया जायेगा…

Ã¾ÖÖŸÖ¡योत्तर काल से लेकर वर्तमान युग का बहुत बडी संख्या में महिला लेखिकाओं का आगमन हुआ। इस युग में नारी सामाजिक और आर्थिक रुप से स्वतंत्र हो गई। अन्तर्जातीय विवाह और विधवा विवाह को वैधानिक किए जाने से नारी की मानसिक स्थिती दृढ हो गई… अनेक न¾Ößन महिला कथाकारों का उदय इस युग में हुआ जिन्होने नितांत न¾Ößन और अछुते विषयों को लेकर कहानियाँ और उपन्यास लिखे विषय वस्तु, क£य, शैली और शिल्प कि दृष्टी से इस युग की लेखिकाओं का योगदान उल्लेखनीय रहा है। इस युग मे जिन प्रमुख लेखिकाओं का उल्लेख किया जाता है उनमें प्रमुख महिला क£ÖÖकÖ¸ Æî-रजनी पानकर, शिवानी, ´ÖÖ®Ö ³Ö>Ö¸ß, कंचनलता सब्ब¸¾ÖÖल, कृष्णा सोबती, निरुपमा रेवती, उषा प्रियंवदा, शशिप्रभा शास्त्री, सुधा अरोडा, ममता कालिया, ´ÖÆ¹ý×®ÖÃÖÖ ¯Ö¸¾Ö•Ö,नासिरा शर्मा, मृणाल पाण्डे, राजी सेठ, सुर्यबाला ÁÖß´ÖŸÖß परुलकर, मृदुला गर्ग आदि। इन सभी महिला कथाकारों ने जीवन की विविध समस्याओं का जहाँ चि¡Öण किया है वहा सामाजिक चेतना के स्वरुप को भी परिभाषित किया है। अनेक महिला कथाकारों ने नितांत न¾Ößन विषय और भावबोध को लेकर अनेक उपन्यास और कहानियॉ लिखी। प्रेम और सेक्स से जुडी अनेक समस्याओं का अत्यंत साहसाी चित्रणइन महिला उपन्यासकारों ने किया इसमें संदेह नही की विषय वैविध्य, न¾Ößन कथ्य और जीवन के अनुभुत एवं प्रामाणिक सत्यो को लेकर महिला कथाकारों ने जिस सÖहित्य का सृजन किया वह सामाजिक चेतना को ही व्यक्त करता है।

शोध प्रबंध का तृत्तीय अध्याय Æ, : " सामाजिक चेतना और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास " । इस अध्याय में सामाजिक चेतना को ध्यान में रखकर मैंत्रेयीजी के उपन्यास साहित्य का विश्लेषण किया जायेगा। वैसे भी पुष्पाजी के उपन्यास सामाजिक चेतना कि दृष्टी से उल्लेखनीय है। उनके उपन्यासों में समाज जागरण का प्रभावपुर्ण चि¡Öण Æ†Ö Æ… ÃÖ´ÖÖ•Ö ´Ö ÆÖ ¸Æ ²Ö¤ü»ÖÖ¾Ö ÛúÖ ×"Ö¡Öण करनेवाले उनके उपन्यास स्त्री ×¾ÖÓ´Ö¿Ö ÛúÖ ÃÖÖ£Ö - साथ सामाजिक जन जागृती को भी प्रोत्साहीत करते है। सामाजिक जागृती ही सामाजिक चेतनÖ Æ… •ÖÖ परिवर्तन का संकेत देती है। ‡ÃÖß †Ö¬ÖÖ¸ ¯Ö¸ कहा जाता है कि जब कोई नई विचारधारा समाज में प्रकट होती है तथा निश्चित उद्देश की ओर बढती है ŸÖÖ ÃÖ´ÖÖ•Ö ´Ö जागृती होती है। इसी जागृती को सामाजिक चेतना कहा जाता है। सामाजिक चेतना क ¬Ö´Ö, †£Ö, राजनीति आदि विविध तत्व है। सामाजिक चेतना के ×¾Ö×¾Ö¬Ö ¹¯Ö, विविध स्तरों पर मैत्रेयीजी के उपन्यासों में व्यक्त हुए है समस्त साहित्य उस साहित्य से भिन्न है जो नारी वाद के नाम से लिखा जा रहा है।

मैत्रेयीजी के उपन्यासों के अनु¿Ößलन से लगता है की उनका समस्त लेखन सामाजिक चेतना की ÃÖÖर्थक अभिव्यÛŒŸÖ ही है। मान¾Ößय जीवन की विसंगतीयाँ और घुटन की छट¯Ö™ÖÆ™ उनके उपन्यासों में देखने को मिलती है। संभवतः इसी कारण लेखिका सहजता से आत्मबोध के ÃÖŸÖ¸ ¯Ö¸ ¯ÖÆÖच जाती है। यह उपन्यासकार एक और क्रांती का संदेश देती है तो दुसरी ओर व्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावना भी जगाती है। स्त्रीविमर्श से जुडी यह लेखिका सामाजिक चेतना के विरुध्द की जार ही साजिश से भी पुरी तरह वाकिब है। यही वह सामाजिक चेतना है जो रचनाकार के समस्त परिवेश को व्या¯ŸÖ Ûú¸ ›Ö»ÖŸÖß Æ… ‡ÃÖ में संदेह नहीं कि मानवीय जीवन मुल्य और सामाजिक चेतना की दृष्टी से इस लेखिकाने महत्वपुर्ण भुमिका निभाई है। इसी दृष्टी को ध्यान में रखकते हुये इस अध्याय में मैत्रेयीजी के उपन्यासों मे व्यक्त सामाजिक चेतना का विवेचन किया जायेगा।

शोध प्रबंध का चतुर्थ अध्याय है: "राजनीति चेतना और मैत्रेयीजी पुष्पा के उपन्यास "। इस विषय को ध्यान में रखकर ही मैत्रेयीजी के औपन्यासिक कृतीयों का विश्लेषन इस अध्याय में किया जायेगा। यह सच है की मैत्रेयीजी कही पर भी राजनीति से जुडी हुई नही है पर उनके उपन्यासों मे ग्रा´Ößण विभाग में चल रही राजनीति का चित्रण यत्र तत्र हुआ है जिससे यह स्पष्ट होता है कि लेखिका कि राजनीति ÃÖ´Ö–Ö और मुल्य चेतना बहु आयामी है। यही कारण है Ûúß राजनीतिक चेतना ÛúÖ अत्यंत मार्मिक चि¡Öण उनके उपन्यासों मे हुआ है। उनके उपन्यास विंध्याचल परिवेश कि मानसिकता और वहाँ पनप रही राजनीति का स्पष्ट चित्र अधोरेखित Ûú¸ŸÖ Æ… मैत्रेयीजी व्यवस्था के बाहय ढांचे पर आक्रमण न कर , व्यवस्था के मुलाधार को ÃÖ´Ö– ाकर उसपर कडा प्रहार करती है। वह जानती है की यह ¤¿Ö •Ö´Öß¤Ö¸Ö †Ö¸ ²ÖÖÆबलियों के चक्र

´Ö ±úÃÖÖ Æ†Ö Æü… ×•ÖÃÖ ´Ö ‡Ãı देश का सामान्य आदमी बुरी तरह से पीसा जारहा है। वैसे विंध्याचल अँचल में लोक तांत्रिक मुल्यों का कोई अर्थ नही रहा। इस प्रकार की प्रदुषित राजनीतिक शोध की व्यवस्था में सर्व सामान्य व्यक्ति का कभी कल्याण नही होगा इसे लेखिका जानती है। इसीलिये सर्व सामान्य जनता की स्थिती सम-ाकर लेखिका यथास्थान कटु व्यंग्य करती है। इन्ही समस्याओं को ध्यान में रखकर राजनीतिक चेतना का विवेचन इस अध्याय में किया जायेगा।

शोध प्रबंध का पंचम अध्याय है: " आर्थिक चेतना और मैत्रेयीजी पुष्पा के उपन्यास **"** इस अध्याय ´Ö मैंत्रेयीजी के उपन्यासों में आर्थिक चेतना पर विश्लेषण किया जायेगा। यह ÃÖ"Ö Æ कि अर्थशास्त्र मैंत्रेयीजी का विषय नही है किंतु एक सजग रचनाकार अपनी रचनाओं मे मान¾Öß य जीवन के विभिन्न रुपों ओर पक्षों पर बराबर ध्यान रखती Æü… मैंत्रेयीजी ने भी यही किया है। उन्हीं ने अपने उपन्यासों में यथास्थान आर्थिक चेतना से जुडे अनेक प्रश्नों और समस्याओं का चित्रण किया है। समकालीन महिला उपन्यासकारों में बहुत कम लेखिकाएॅं है जिन्होने अपनी रचनाओं मे आर्थिक प्रश्नों या समस्योओं को मुखरित किया हो। मैंत्रेयीजीने आर्थिक चेतना को लेकर अपने उपन्यासों में यथास्थान चर्चा करते हुए अनेक आर्थिक समस्याओं को उठाया है। वर्तमान जीवन में कोई क्षे त्र ऐसा नहीं है जहाँ अर्थ का महत्व न हो। वैसे भी अर्थ का महत्व सभी युगों में रहा है पर वर्तमान युग में उसकी व्याप्ती और अधिक बढ गई है। हमारे जीवन में आज कोई ऐसा क्षे¡Ö या विषय नहीं है जहाँ आर्थिक विषय को नजर-अंदाज किया जाता हो। इस लेखिका ने भी इस ¾ÖÃŸÖ ÛÃ£Ö×ŸÖ और जीवन यथार्थ को सम-ाकर ही आर्थिक विषयोंसे जुडे प्रश्नों और समस्याओं को रेखांकित किया है। हमारे देश में स्वाधीनता के पश्चात आर्थिक स्थि×ŸÖयों और नी×ŸÖयों में ²ाडी तेजी से परिवर्तन हुआ है। देश में पंचावार्षिय योजनाओं के लागु होने से आर्थिक विकास तो हुआ ही है पर यह विकास जैसा होना चाहिए था वैसा नहीं हुआ। इन आर्थिक योजनाओं का लाभ एक वर्ग विशेष ही कैसे उŠÖता रहा है। इसका प्रभावपुर्ण चित्रण मैंत्रेयीजी ने अपने उपन्यासों में किया है। गलत आर्थिक नीतियों के कारण ही इस देश की सर्वसामान्य जनता जितनी गरीब थी, उससे ज्यादा गरीब हो गयी। आज की आर्थिक स्थितिया तो और भी अधिक विषमताओं और विसंगतियों ´Ö जकड गई। आज जीवन में सारे मुल्यों से अधिक महत्वपुर्ण मुल्य आर्थिक विषयों का हो गया है जिसके परिणाम स्वरुप हमारे सामाजिक, राजनीतिक और संस्कृ×ŸÖ मुल्य भी प्रभावित है। जमीदारी उन्मुलन कानुन तो बना पर उसका लाभ भी जमीदारों ने ही सबसे अधिक उठाया है। क्यों कर हमारी आर्थिक योजनाएँ उन तक नहीं पहुँची जिनके लिए वह बनाई गई भी और क्यों आज भी आर्थिक विषमता जैसे क¾Öß वैसे ही है। इन सभी अर्थ से जुडी हुई समस्याओं का इस अध्याय में विस्तार में विश्लेषण किया जायेगा।

शोध प्रबंध का षष्टम् अध्याय है : " मैंत्रेयी पुष्पा के उपन्यास भाषा - x¿Ö»¯Ö "... इस अध्याय में मैंत्रेयीजी के उपन्यासों का अध्यायन भाषा और शिल्प की दृष्टी से किया जायेगा। मैंत्रेयीजी ने अपने उपन्यासों में एकदम सहज, सरल और स्वाभाविक भाषा का प्रयोग किया है। यह भाषा शब्दकोश की न होकर जीवन की भाषा है जिसमें किसी प्रकार कृŸÖमता या बनाव™ß पन नहीं है। इस भाषा को पढकर यही लगता है की लेखिकाने बुन्देलखण्ड कि जन भाषा को इस ŸÖ¸ÆüÖ ¸Ö“Ö - बसा लिया है की न तो उन्हे शब्द गढने की आवश्यकता महसुस हुई और न शब्दकोश को देखने का समय उन्हें मिला। उनकी भाषा न तो किसß ¾ÖÖ¤ü x¾Ö¿ÖÂÖ ÃÖ •Ö›ß Æü †Öî¸ü न किसी दर्शन से। सहज, सरल और कृत्रिमता से दुर जन सामान्य कि भाषा का उत्कृष™ü उदाहरण ही उनके उपन्यास है। उनके व्दारा प्रयुक्त शब्द और वाक्य - विन्यास उन की भाषा को अर्थ का नया आयाम देते है। मैत्रेयीजी ने भाषा की अभिधा को ही अधिक महत्व दिया है। जिसÃÖ ÃÖ´ÖÃÖÖ´ÖÖxयक जीवन की विसंगतियों को वे मुक्त रुप से व्यक्त कर सकी। लेखिकाने जैसा अपनी आँखों से देखा और अनुभुत किया उसे उसी रुप में व्यक्त किया है। क्यों कि उनकी भाषा किसी भी प्रकार के इंद्रजाल में फँसकर नहीं रही। इस भाषा की अभिधा प्रधानता ही इसका वैशिष्ट है। इस लेखिका ने अपनी भाषा को सिमीत दायरे और कटघरे से बाहर निकालकर जन समुदाय में पहुँचया है। आँचलिक भाषा के प्रति इस लेखिका को मोह है जो उनकें उपन्यासों में सर्वत्र दिखाई देता है। भाषा में भिन्न - भिन्न शैलियों का प्रयोग लेखिका ने यथास्थान किया है।

शिल्प की दृष्टी से भी लेखिका ने भाषा कÖê निखारा है। उनकी भाषा - x¿Ö»¯Ö ³Öß उपन्यासों में कहीं पर भी किसी कृत्रिमता या बनावटीपन का शिकार नहीं हुई। उनके उपन्यासों कÖê कथानक भी अमिधा प्रधान ही है और अमिधा का वास्तविक सौन्दर्य उसकी वस्तुपरकता में ही है। शिल्प का सम्बन्ध अभिव्यक्ति पक्ष से अधिक रहता है। लेखक जो कुछ अनुभव ¯ÖÏÖ¯ŸÖ करता है उसी अनुभव को भाषा, शैली और चरित्रो के माध्यम से व्यक्त करता है। एक लेखक शब्दो, चरित्रो और कथा वस्तु का रखरखाव जितना अधिक ध्यान से करता है, वही उसका शिल्प होता है और उपन्यासकार अपनी रचनाओं में विx³Ö®Ö ³ÖÖ¾ÖÖë, †नुभुतियों और संवेदनाओं व्दारा शिल्प का सृजन करता है। वैसे भी शिल्प का सम्बन्ध कला से होने के कारण कला की कसौटी पर ही शिल्प को परखा जाता है और शिल्प को तराशकर ही उपन्यासकार अपनी अभिव्यक्ति को प्रभावपुर्ण बनÖŸÖÖ Æü… ¯ÖÏÖ¡ÖÖ †Öî¸ü ÃÖ¾ÖÖ¤ü को भी मैंत्रेयीजी ने तराशकर ही उपन्यासों में यथास्थान पर रखा है। कथानक, संवाद, "Öx¸¡Ö, ³ÖÖÂÖÖ, शैली सभी शिल्प के अंग है। इन सभी अंगो को लेखिकाने तराशकर ही प्रयुक्त किया है। यही कारण है की शिल्प कि दृष्टी से लेखिका कßß रचनाएँ सधी हुई और प्रभावपुर्ण बन पडी है।

¿ÖÖ¬Ö प्रबंध का अंतिम और स¯Ö´Ö अध्याय है: “ ˆ¯ÖÃÖÓÆÖ¸ ” इस अध्याय में ˆ¯ÖÃÖÓÆÖ¸¡ के रुप में सभी अध्यायों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए जायेंगे। मैत्रेयीजी ने चेतना के विविध रुपों का अंकन अपने उपन्यासों मे किया है। जिस के माध्याम से सामाजिक, राजनीतिक¾ü ŸÖ£ÖÖ आर्थिक चेतना के अनुशीलन से निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया जायेगा। निसंदेह चेतना के विभिन्न रुपों कि दृष्टी से मैत्रेयीजी की उपलब्धियाँ महत्वपुर्ण और उल्लेखनीय है। उनके उपन्यासों में कही पर भी न तो कृत्रिमता है और न बनापटीपन और लेखिका किसी प्रकार के चमत्कार और इन्द्रजाल पर विश्वास नही रखती। जीवन के यथार्थ का चित्रण करनेवाली इस लेखिका में न¾ÖßÖन जीवन मुल्यों के प्रति एक ऐसी छटपटाह™ü Æî •ाो पाठकों को भी बेचैन कर देती है। बुन्देलखण्ड के सर्व सामान्य व्यक्ति के जीवन कि दैनिक समस्याओं का आत्याधिक सहज और स्वाभाविक रुप में उद्‌घाटन उनके उपन्यासों में हुआ है इसी आधार पर शोध प्रबंध के अध्यायों के अनुरुप निष्कर्ष प्रस्तुत करने की योजना है।

अंत में परिशिष्ट होगा जिसे तीन भागों में विभाजित किया जायेगा। परिशिष्ट एक में मुल ग्रंथ सुची होगी। परिशिष्ट दो में संदर्भ ग्रंथो कि सुची होगी और परिशिष्ट तीन में शोध प्रबंध ´Ö प्रयुक्त पत्र - ¯Öत्रिकाओं की सुची होगी।